www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-10* *October 2025***

उत्तर प्रदेश की थारू जनजाति पछिमहा जनजाति में विवाह

प्रो0 राजेश कुमार सिंह

शोध निर्देशिका, प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

ज्वाला चौधरी

शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारांश–

थारू जनजाति के तराई क्षेत्र में फैली हुई है इसके अतिरिक्त भी प्रदेशों के अन्य भागों में यह थारू जनजाति पायी जाती है अधिकांश थारू जनजति तराई क्षेत्रों में ही स्थित है लेकिन कुछ गाँव पर्वतीय क्षेत्र एवं जंगली प्रदेशों में भी स्थित है थारू जनजाति प्रकृति की गोद में निवास करती है। नेपाल देश के तराई क्षेत्रों में भी पायी जाती है। थारू जनजाति के विवाह भारत और नेपाल में किया जाता है भारत और नेपाल का सम्बन्ध बहुत गहरा रिश्ता है थारू जनजाति में कुल 7 उपजनजाति है।

उद्देश्य–

थारू जनजाति में सबसे उच्च जनजाति पछिमहा होते है पश्चिम की ओर से पूरब की ओर जाने के कारण पछिमहा कहलाते है थारू पछिमहा में अपने–अपने पछिमहा जाति में विवाह करते है। थारू पछिमहा जनजाति में अलग परम्परा से विवाह किया जाता है। थारू जनजाति में पछिमहा जनजाति 6 उप जनजाति में पछिमहा जनजाति विवाह नही करते है वहाँ सबसे उच्च जनजाति होते है पछिमहा किसी के वहाँ जाते है तो मान सम्मान बहुत अधिक किया जाता है लेकिन वह खाना नही खाते है और वहाँ स्वयं बना कर खाते है।

प्रस्तावना–

थारू में पछिमहा जनजाति जब लड़की के पिता अपने लड़की के लिए रिश्ता ढूढने जाते है विवाह के लिए बात चीत चलायी जाती है तो लड़का मिल जाता है लड़की के पिता के साथ कुछ लोग आते है लड़के के घर पर वह दोनों के पक्ष में बात चीत करते है जब वह विवाह पक्का हो जाता है तो वह दिन साइत निकाल कर बता दिया जाता है और लड़की के पिता जो कुछ अपने साथ मिठाई, उपहार समान लाये रहतें है वह लड़के को दे देते है और विवाह केवल जनवरी, और फरवरी के महीने में किया जाता है इस प्रकार देखा जाये तो थारू जनजाति के समाज में विवाह करने के लिए जनवरी फरवरी महीने में किया जाता है जबकि विवाह का दिन लड़के पक्ष के लोग ही तय करते है परन्तु कन्या पक्ष के लोगों को भी सलाह ली जाती है सबसे पहले निमंत्रण लड़के और लड़की के मामा, नाना के घर जाता है शुभ माना जाता है।

चूल्हा रखना–

विवाह की दिनाँक के दो दिन पहले से ही तैयारिया प्रारम्भ कर दी जाती है। यदि विवाह वृहस्पतिवार को तय हुआ तो मंगलवार को ही शगुन का चूल्हा रख दिया जाता है इस रस्म में घर की मामी, फुआ, बहिन एक नया चूल्हा घर में स्थापित कर देती है। इसे नव दम्पत्ति के भावी जीवन के लिए शुभ मानते है। चूल्हा रखने के साथ ही गाना बजाना होता है।

थारू के पछिमहा जनजाति की भागुन–

विवाह के दिन लड़क एवं लड़की दोनो के घर पर शगुन की रस्म पुरी की जाती है जिसमें लड़का और लड़की की

माता–पिता अपने गाँव के प्रधान (मुखिया) के घर एक थाली में चावल और कुछ मुद्रा रखकर जाती है। प्रधान की पत्नी उसमें कुछ चावल मुद्रा अपनी ओर से भी रख देती है और लड़का–लड़की के लिए मंगल कामना करती है इसके बाद लड़का और लड़की के आंगन में चावल के आटे का चौक बनाकर उसके चारो ओर कोनेा पर चौक के माध्यम से मिट्टी के घडे पर दीपक जला कर रख दिया जाता है चौक के बंगल में लकड़ी चावल तथा उसके ऊपर रखकर उस पर थाली रखी जाती है जिसमें हरी दूब, पिसी हल्दी तथा सरसों का तेल रखा रहता है। थाली के पास कटार और छेदना भी रख दिया जाता है।

थारू और पछिमहा जनजाति में तिलक–

थारू जनजाति के तिलक में लड़की के पिता अपने कुछ लोगों साथ में ले जाते है जैसे, नाना, मौसा, फुफा, जीजा इत्यादि और कुछ गाँव के लोगों को शामिल किया जाता है। लगभग न्यूनतम 20 से अधिकतम 50 लोगों की संख्या हो जाती है तिलक लेकर लड़के के गाँव जाते है लड़के के पिता स्वागत के लिए खड़े रहते है लड़की के पिता रिश्तेदार, गाँव के लोग जलपान कराया जाता है तिलक के समय शुरू किया जाता है तिलक में लड़की के भाई तिलक चढ़ाते है और लड़की के भाई जो कुछ समान होताहै उसे फूल वाले परात पर रखकर चावल, फल, फूल, कशेली, दूब, हल्दी, कपड़े के सटे होते है उसे पर पैसा रखने के बाद में चुनरी से ढ़क दिया जाता है और लड़के के हाथ पर रखा दिया जाता है मंत्र पढ़ने के बाद तिलक के कार्यपूर्ण रूप से सम्पन्न होता है सब लोगों खाना के लिए बुलाते है जिसमें खाने में मांस, मछली, अण्डा और मुर्गी के साथ चावल रोटी की व्यवस्था होती है लेकिन कमल के पत्ते पर लोग को खाना खिलाते है उसके बाद में अपने गाँव चले जाते है।

थारू के पछिमहा जनजाति में विवाह–

लड़का और लड़की दोनो लोग लोहे के समान अपने पास रखते है लड़की अपने पास लोहे का छेदन रखती है और लड़के के पास लोहे का कटार होता है जब तक विवाह सम्पन्न नही हो जाता है तब तक लड़की और अपने पास छेदना और कटर रखते है तब तक लड़की और लड़का अपने पास छेदना और कटार रखते है थारू जनजाति के लोग जंगलों में जाते है और अपने–अपने गाँव से जाते है जैसे करोली, चावल, दूध, दही, हल्दी और सिन्दुर के साथ में ले जाते है और उस व्यक्ति को खाने के भी समान साथ में देते है जैसे चुड़ा, भूजा और मिठाई पानी भी दिया जाता है जंगल में जाने के बाद जब पेड़ों के राजा सखुआ जो सबसे पुराना होता है उसी के पास जा कर सखुआ के पेड़ में कशेली, दूब, चावल, चढ़ाकर और दही, सिन्दुर, हल्दी सखुआ के पेड़ पर लगाते है पूजा करते है कि हे ईश्वर वन या जंगल वायु, पानी, आधी, तुफान अपने पास लिए रखना हम आप को (निमंत्रण) देने आये है और सखुआ के पेड़ से डाली को भी मांगते है कि अपने साथ पाँच डाली काट कर ले जाते है विवाह में शुभ माना जाता है कुछ लोग जंगल में ताल, तालाब में कमल के फूल का पत्ते तोड़ कर अपने साथ ले जाते है और घर में जाकर जहाँ मंडप बना होता है वहाँ पाँच स्थान पर सखुआ के पेड़ के डाली को गाड़ दिया जाता है। साथ में लकड़ी का हल भी गाड़ दिया जाता है हल के हरीश मुट्ठी में दीया को चार–चार के जोड़े, दो जगह लटका दिया जाता है कुश के खार में उड़द के दाल से दीया के चिपकाया जाता है आम के पत्ते में रस्सी में बान्धकर मंडप के चारो तरफ लटका दिया जाता है सखुआ के पेड़ के खम्भों पाँच जगह गाड़ दिया जाता है उस पर चिकनी मिट्टी लगाकर चिकनी मिट्टी की झुरिया भी बना दिया जाता है और मंडप को नया तरह से सजाया जाता है एक बांस भी गाड़ दिया जाता है घर के बगल में बांस सबसे ऊपर एक लाल पट्टी और कुश के खार के साथ बान्धते है लड़का और लड़की के लिए दोनो पक्ष में अपने–अपने घर पर बुकूआ, काचुर, गौन, हल्दी और तेल से सब को फिटकर बनाया गया है। बुकूआ लड़की और लड़के के शरीर में लगाया जाता है तीन दिन तक बुकूआ लगातार लगाया जाता है लड़का और लड़की अपने घर पर ढीकरी के गोले–गोले से हाथ मे लिए रहते है और अपने देवी देवता के स्थान पर जाकर चढ़ाकर पूजा करते है।

स्नान–

लड़के और लड़की को उनके अपने–अपने घरों में न्यौता की रस्म के बाद स्नान कराया जाता है लड़का को उसकी मामी, फुआ, बहन, भाभी तथा लड़की को उसकी मामी, फुआ बहन और भाभी स्नान कराती है स्नान करने वाले को न्यौता की रस्म से आयी रकम में से कुछ पैसे प्राप्त होते है लड़के और लड़की को दोनों जोठा के ऊपर पाँच सखुआ के लकड़ी ला कर जोठा पर रखकर लड़के और लड़की के अपने–अपने घर पर जोठा के ऊपर पाँच सखुआ के लकड़ी ला कर जोठा पर रखकर लडके और लड़की के अपने–अपने घर पर जोठा के ऊपर बैठकर उनके शरीर पर पानी गिराते है।

लड़के और लड़की को घर के अन्दर तैयार किया जाता है लड़की के पीली साड़ी दूब की माला हाथ में लोहे की छेदना लिए रहती है और लड़के को पगड़ी (फिटा) कपड़े का जनेऊ, दूब का माला हाथ में कटार होता है दुल्हे और दुल्हन अपने–अपने घर पर नेहाछ में कपड़ा धान इत्यादि सामग्री डालते है थारू जनजाति में रीति–रिवाज के अनुसार दुल्हे की माता–पिता ने चड़ोल के (पुरुष) और गुड़िया (महिला) के गेहूँ के आटे से यह बनाकर तैयार कियाा जाता है (शिव और

पार्वती) के रूप में मानते है उसके बाद वह दुल्हन अपने देवी–देवता को पूजा करते है बाद में बारात की तैयारी किया जाता है दुल्हे के माता–पिता दुल्हन के लिए सोने–चाँदी के गहने ले जाते है दुल्हन के लिए एक सेट कपड़ा के साथ पाँच साड़ी दुल्हन के श्रृंगार की समस्त वस्त्र भी ले जाते है बारात पालकी (डोली) लाडिया, डायर (बैलगाड़ी) और पैदल जाते है दुल्हा पालकी में जाता है।

बारात प्रस्थान–

बारात दुल्हन के गाँव के लिए प्रस्थान करती है। दुल्हन के गाँव की सीमा पर पहुँचने पर पटका या नगाड़े की आवाज करते है। दुल्हन के पिता फूल के लोटे में पानी के ऊपर और आम के पत्ते रखते है और स्वागत के लिए खड़े रहते है गाँव के बाहर बारातियों को ठहराया जाता है रात्रि भर संगीत व नृत्य का कार्यक्रम चलता रहता है दुल्हन के पिता और दुल्हे के पिता बात चीत करने के बाद दुल्हन के घर जाता है।

अगवानी–

अगवानी के लिए दुल्हे, दुल्हन के घर जाते है दुल्हन के पिता पूजन कराने के बाद दुल्हा का द्वार पूजा होता है। दुल्हन के तरफ से दुल्हे को गीत के माध्यम से सोहर या गाली देते है और फूल के छर्रा झुकते है एक तरफ बारातियों को जलपान दिया जाता है और बारातियों को खाने के लिए बुलाया जाता है कमल के फूल के पत्ते पर खाना दिया जाता है खाने में माँस, मछली, मुर्गी, अण्डा और चावल, रोटी इत्यादि सामग्री दिया जाता है बारात में जब गुज्जूई के साथ कुछ लोग औरत जाती है कलशा दिखाने के लिए साथ में डलवा और झूरिया होता है। गुज्जूई के सिर पर डलवा होता है और उनके हाथ में झूरिया होता है लेकिन झुरिया पर दीपक जला हुआ होता है उसके बारात में गुज्जूई दुल्हे के पिता से नेग मांगती है तब दुल्हे के पिता नेग दे देते है वहाँ से चली जाती है। दुल्हन भी अपने देवी–देवता की पूजा करने के बाद में दुल्हन की पूजन कराने के बाद में दुल्हा के बड़े भाई दुल्हन को धाग–पाठ डाले जाते है उसके बाद में दुल्हा और दुल्हन के घर जाते है दुल्हे और दुल्हन दोनों लोग एक साथ बैठे है उनके दुल्हे और दुल्हन को दोनो लोग को गुज्जूई एक गाठ पड़ती है पाँच समान दुल्हन के माता–पिता दोनों लोग को देते है साथ में धोती भी देते है जैसे– बटूली, कराही, तावा, चौकी बेलना और बाल्टी इत्यादि समान भी देते है दुल्हन के माता–पिता हाथ में रखने के बाद दुल्हे और दुल्हन के सीक रखने पर दुल्हन के भाई सीक पर पानी गिराने के बाद उसके माता–पिता ने अपनी दुल्हन (लड़की) को सात फेरो के लिए कहा जाता है। पाँच बार धूमने के साथ दुल्हन के भाई धान के लावा पत्थर के सील पर छुकर दुल्हन या दुल्हे के ऊपर लावा (फूलों) का वर्षा किया जाता है दुल्हा और दुल्हन के सिन्दुर लेकर सात बार उसके मांग में सिन्दुर डाल कर विवाह कर लेता है और सात फेरा मंडप या कलशा को धुमने के बाद कोहबर जाते है। दुल्हन की बहन द्वार पर खड़ी होती है प्रवेश के लिए मना करती है दुल्हा और दुल्हे के जीजा से कुछ चिन्ह या पैसामांग करती है दुल्हा ने कुछ पैसे देकर आगे बढ़ जाते है। वहाँ जाने के बाद वह की गुज्जूई चावल के पीठर बना कर रखा देती है। दुल्हा दीवार पर दो पीठर को सिन्दुर से टिक देता है और दुल्हन भी दीवार पर दो पीठर को सिन्दुर टिक देती है वहाँ से दुल्हन जाने लगती है वहाँ दुल्हा वही रहता है तब जलपान देने के बाद दही, चीनी (लभाकाऊ) के साथ दिया जाता है दूसरे दिन प्रातः दुल्हे को बुलाया जाता है बासिया खाना के लिए तब दुल्हा और दुल्हा के छोटे भाई भी खाने के लिए जाते है दुल्हन के घर वाले उहार में एक आना, दो आना, रूपये और कुछ समान दिया जाता है उसके बाद दुल्हा और दुल्हन के माता–पिता, मामा, मामी, नानी, नाना, मौसी, मौसा, फुआ फुफा, के पैर छूकर नमस्ते करते है यह दुल्हन लाल साड़ी पहनती है माता–पिता दुल्हन की विदाई कर देते है।

गाँठ–बधाई–

बारात दुल्हन सहित दुल्हा के गाँव के लिए प्रस्थान करती है और दुल्हा के माता, मौसी, फुआ, दादी, नानी, दीदी घर के लोग स्वागत करने के लिए होती है जब पालकी (डोली) ओर जाती है तो दुल्हीन और दुल्हे को ओखली और मुसर से परछावन करती है उसके बाद पालकी (डोली) से बाहर निकालती है दुल्हन और दुल्हा को घर के अन्दर ले जाने पर दुल्हन से कलशा पर पैर से गिराती है और आगे बढ़ जाती है दुल्हा के घर मंडप में जाने के बाद दुल्हन और दुल्हे दोनो लोग जाकर मंडप पर बैठ जाते है दुल्हा की माता खौलार से परछावन करती है दुल्हा और दुल्हीन के दोनो लोगों की गांठ बधाई वाली दुल्हा की बहन होती है और जीजा (बहनोई) दुल्हे को माऊर बधाई मागते है। दुल्हा की माता–पिता दोनो लोग में से एक कोई भी कुछ उपहार दे देता है दुल्हे और दुल्हन दोनो लागे घर में जाने वाले है और चौक पूरा हुआ दुल्हन और दुल्हे घर के अन्दर बढ़ जाते है। दुल्हे की बहन द्वार पर खड़ी होती है और कहती है कि जब दुल्हा अपने बहन को कोई चिन्ह या पैसा देकर अन्दर जाने की अनुमति मिलता है उसके बाद वह कोहबर में जाते है दुल्हे की देवी देवता के बगल में बैठती है वह पर भी गुज्जूई, चावल की पीठर बनाकर दुल्हे और दुल्हन भी दीवार पर दी पीठर पर सिन्दुर लगाकर और दुल्हे भी दीवार पर दो पीठर पर सिन्दुर लगाकर दोनो लोग पूजा कर लेते है दुल्हन एक रात के लिए आती है।

थारू जनजाति की विवाह के बाद यह रीति रिवाज के अनुसार शुभ मान जाने के लिए भेड़ या बकरा का बलि देते है और माँस मदिरा का सेवन करते है।

थारू जनजाति की चौथी :–

दूसरे दिन चौथी चलाने जाते है दुल्हन के पिता, भाई, चाचा, भतीजा, भतीजी, भांजा और कुछ लोग भी आते है दुल्हे के घर जाते है। दुल्हन के लेने आते है उसके बाद दुल्हन के लेकर अपने गाँव जाते है उसके बाद 6 माह बाद में गौना होता है 6 महीने के अन्दर दुल्हा अपने ससुराल नही जाता है और जहाँ तक ससुर के गाँव की सीमा तक नही जाना रहता है जब तक गौना नही हो जाता है।

गौना–

यह रस्म ''गौना'' की है थारूओं में गौना कराने को कहा जाता है अक्टूबर और नवम्बर में किया जाता है विवाह सिर्फ जनवरी और फरवरी में किया जाता है विवाह होने के बाद दुल्हन अपने मायके में आ गयी अक्टूबर और नवम्बर महीने तक रहती है अक्टूबर और नवम्बर में एकादशी के दिन गौना थारू जनजाति (पछिमहा) में किया जाता है गौना में तीन दिन में सम्पन्न किया जाता है दुल्हे गौने के लिए अपनी नव विवाहिता को अपने घर लाने के लिए अपने कुछ रिश्तेदारों के साथ अपनी ससुराल जाता है दुल्हे के साथ आये लोगों को स्वागत किया जाता है। पहले दिन में जलपान और सादा खाना दिया जाता है दूसरे दिन उपवास (व्रत) सिधाड़ा, गाजर, गाजी, मुंगफली, केला, कमल के फूल (छोटा बेरा की लस्सी) इत्यादि फल भी दिया जाता है। तीसरे दिन (अंतिम दिन) में खाना के लिए माँस, मछली मुर्गी, अण्डा और चावल, रोटी भी दिया जाता है दुल्हन के माता–पिता कुछ उपहार के समान होता है उसे देकर बिदाई किया जाता है।

दूसरा गौना (दोगा)–

एक सप्ताह ससुराल में रहने के बाद दुल्हन पुनः अपने पिता के साथ अपने मायके चली जाती है। कुछ दिन बाद दुल्हा के पिता (दोगा) के दिन रखने के लिए दुल्हन गाँव जाता है अक्टूबर और नवम्बर में (दोगा) के दिन रखा जाता है। इसके बाद 1 वर्ष में दूसरा गौना (दोगा) कहा जाता है दुल्हन के माता–पिता भी अपने रीति–रिवाज के अनुसार अपने लड़की को बिदाई करती है वहाँ पहले त्यौहार में नाग, पंचमी, होली को दुल्हन के माता–पिता बुलाते है अपने माता–पिता के साथ गाँव में पहला नांग पंचमी, होली को मनाती है दुल्हा और दुल्हन के दोनो पक्ष की तरफ से धान आता है उसे धान के खेत में बोते है क्योंकि शुभ के लिए होता है सामान्य रूप से अपनी ससुराल में रहने लगती है और घरेलू कार्यो में व्यस्त हो जाती है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

निष्कर्ष–

थारू जनजाति के पछिमहा में विवाह निम्नलिखित प्रकार से होता है।

1. थारू जनजाति में 7 उपजनजाति पाया जाता है जैसे पछिमहा, कठेरिया, नवलपुरिया, खौशिया, खागड़ा, डंगरिया (रोतार) और जोगिया (बभान खवास) थारू जनजाति होता है।
2. थारू जनजाति के पछिमहा में अपने–अपने पछिमहा में विवाह किया जाता है।
3. थारू जनजाति के 7 उपजनजाति में सबसे उच्च जनजाति पछिमहा होता है।
4. थारू जनजाति में सखुआ की पूजा किया जाता है।
5. थारू जनजाति की लड़की 10 से 12 वर्ष और लड़का 12 से 14 वर्ष की आयु में विवाह किया जाता था।
6. थारू जनजाति के पछिमहा विवाह के समय 1 दिन का मरजाद किया जाता था।
7. थारू जनजाति के पछिमहा में गौना 3 दिन के लिए किया जाता था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. डॉ0 वर्मा सुभाष चन्द्र, ''थारू जनजाति एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'', नवयुग पब्लिसर्श एण्ड ड्रिस्टीब्यूटर्स, दिल्ली, 2008
2. डॉ0 उप्रेती हरिशचन्द्र, ''भारतीय जनजातियाँ : संरचना एवं विकास'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007
3. हसनैन, नदीन, ''जनजातीय भारत'', जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रव्यूटर्स, नई दिल्ली, 2007
4. डॉ0 उपाध्याय आनन्द कुमार, ''विलुप्त होती भारतीय जनजाति संस्कृति'', राज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2019
5. पाण्डेय गया, ''भारतीय जनजातीय'', कसैप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2007

Cite this Article

'प्रो0 राजेश कुमार सिंह, ज्वाला चौधरी', "उत्तर प्रदेश की थारू जनजाति पछिमहा जनजाति में विवाह", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:10, October 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i100001

Published Date- 01 October 2025